## आत्मा (AtmanèSoul)

### परिचय

अद्वैत वेदान्त केवल एक ही तत्त्व मानता है। वह तत्त्व आत्मा है। आत्मा ज्ञान रूप है। आत्मा के अतिरिक्त जो कुछ है वह अनात्मा है। अनात्मा आत्मा का विषय है। अनात्मा आत्मा की एकता एवं अद्वैत का विरोधी नहीं है। सुरेश्वर ने कहा है, "इस लोक में आत्मा और अनात्मा प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध है। इसमें अनात्मा सर्वत्र आत्मापूर्वक है।" शंकराचार्य के अनुसार दृष्टि अर्थात् ज्ञान ही आत्मा का स्वरूप है। दृष्टि या ज्ञान से भिन्न द्रष्टा या ज्ञाता, आत्मा का स्वरूप नहीं है। उपनिषदों आदि में आत्मा के लिये अनुभव, चित्त, ज्ञान, संबित आदि नामों का भी प्रयोग हुआ है।

प्रत्येक मनुष्य अपनी आत्मा की सत्ता, अस्तित्व के बारे में ज्ञान रखता है, और इसके विपरीत कोई भी मनुष्य नहीं सोचता कि वह नहीं है। डेकार्ट की

Scanned by CamScanner

भांति शंकर की आत्मा के साक्षात् निश्चित विचार के अन्तर्गत सच्चाई एवं सत्य का आधार पाता है, जिसको अन्य पदार्थों के विषय में उत्पन्न होने वाले सन्देह नहीं बांधते। यदि आत्मा की सत्ता का ज्ञान न होता हो प्रत्येक मनुष्य यही सोचता है कि 'मैं नहीं हूं', पर यह सत्य से पूर्व की है; सत्य एवं असत्य, सच एवं झूठ से भी पूर्व की है। यथार्थता भ्रम, मिथ्या, अविद्या, पुण्य, पाप से भी पूर्व की है।

ज्ञानेन्द्रियों, मन और बुद्धि की शक्ति स्वनिर्भर नहीं है। शंकराचार्य के अनुसार, ''इन इन्द्रियों की क्रिया को अपने साथ शक्ति प्राप्ति की आवश्यकता है और यह प्राप्ति इन्हें आत्मा से ही मिलती है, क्योंकि वह शक्ति आत्मा की ही वस्तु है। आत्मा का यथार्थ स्वरूप नित्य ज्ञान है।'' परन्तु यह चेतन सत् जो अचेतन, जड़-जगत् का कारण है कोई सीमाबद्ध शक्तिशाली चेतना नहीं परन्तु निरपेक्ष है क्योंकि अनेक पदार्थ, द्रव्य, वस्तुएं, घटनाएं जो इनमें अथवा सीमाबद्ध चेतना में एक व्यवस्था में नहीं हैं तो भी वह उस यथार्थ सत् में विद्यमान रहती हैं। इसलिये मनुष्य को जरूरी रूप से एक निरपेक्ष परम चेतन सत् की कल्पना करनी पड़ती है जिसकी यह घेराव रूपी सीमित शक्तिशाली चेतना अर्थात् जीवात्मा एक अंश ही है। मूल आधारभूत चेतना जो सारे यथार्थ अस्तित्व का आधार है वह आत्मा है। मानुषी चेतना जीवात्मा के साथ नहीं जोड़नी चाहिए, जो संसार के विकास के अन्त में प्रकट होती है। अनुभव रूपी वस्तुएं, पदार्थ, द्रव्य, घटनाएं प्रत्यक्ष रूप में उत्पत्ति एवं प्रलय के अधीन हैं तथा वे स्वप्रकाशित हैं। यह निर्मल, अमरत्व, अमृतत्त्व, शुद्ध चेतन सर्वोच्च तत्त्व है जिसके अन्दर ज्ञाता, ज्ञान एवं ज्ञेय का कोई भेद नहीं है। यह आत्मा इन्द्रियों से परे है। यह निरपेक्ष ज्ञान का सारतत्त्व है। यह निर्विशेष चेतना है। यह स्वप्रकाश है, क्योंकि यह सदैव मनुष्य की अनुभूति एवं चेतना में विद्यमान है। उसको जानने की आवश्यकता नहीं है। दूसरी वस्तुओं को तो चेतन अर्थात् आत्मा से जाना जा सकता है, प्राप्त किया जा सकता है। आत्मा को जानने के लिये किसी दूसरी आत्मा या चेतना की आवश्यकता नहीं, परन्तु यह स्वसिद्ध है।

जीवों में जो भिन्न-भिन्न आत्माएं दिखाई देती हैं, वास्तव में वे सब एक ही आत्मा है जो नित्य, अमर, शाश्वत है। इसके अतिरिक्त सब कुछ भ्रम है, मिथ्या है, अविद्या है। आत्मा के अतिरिक्त यह जगत् भी भ्रम, माया है। आत्मा के अतिरिक्त सभी कुछ क्षण रूपी है। सभी दर्शन आरम्भ से ही इस आत्मा की खोज में लगे हुए हैं। वेदान्त और अद्वैत वेदान्त भी इस सत्य, सत् की खोज में लगे हुए है। अपनी आत्मा का ज्ञान ही सच, सत्य, यथार्थ ज्ञान है। जैसे ही

Scanned by CamScanner

आत्मा का दर्शन हो जाता है, वैसे ही सभी भ्रम दूर हो जाते हैं। जब तक मन में वासनाएं, लोभ, मोह, क्रोध, राग, द्वेष, अहंकार आदि हैं जीव इधर-उधर भटकता रहता है। परन्तु जब तक मन वासनाओं, तृष्णाओं से शान्त नहीं होता तब तक जीव महान् सत्य, यथार्थ, नित्य सत् अर्थात् आत्मा को नहीं जाना जा सकता। शुद्ध चित्त होकर जब आत्मा मोक्ष की प्राप्ति के लिये अन्तिम सत्य को खोजती है तब गुरु शिक्षा देता है कि 'तू ही महान् सत्य है, तू ही आत्म है।' इस उपदेश के उपरान्त साधक स्वयं सत्य, यथार्थ, सत्, आत्मा का साक्षात्कार करता है और वह सच्चिदानन्द को प्राप्त कर लेता है। वह जान जाता है कि आत्मा ही ब्रह्म है, ब्रह्म ही आत्मा है।

**आत्मा के अस्तित्व के प्रमाण** (Proofs for the Existence of soul)—ज्ञान के सभी प्रमाण आत्मा के अस्तित्व पर ही निर्भर करते हैं। क्योंकि इस तरह का अनुभव स्वतः प्रमाण है। आत्मा जो स्वयं ज्ञान के अस्तित्व को सिद्ध करती है, ज्ञान प्राप्त करती है, स्वयं ज्ञान है, उसको प्रमाणों से सिद्ध करने की क्या आवश्यकता है? केन उपनिषदों के अनुसार ज्ञान आत्मा संबंधी भाव का विषय है। इसके अस्तित्व का साक्षात्कार किया जाता है। जब दूसरे प्रमाणों से ज्ञान प्राप्त करते हैं तो इसका अर्थ यह है कि आत्मा है जो ज्ञान प्राप्त करती है। मनुष्य को चाहिए कि वह इसको स्वसिद्ध मान ले, जो अपने आपमें में, वास्तव में, यथार्थ है, वह यथार्थ ही है, सत् है, इसलिये अपने लिये यथार्थ सत् है। आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करने का अर्थ है एक नित्य ब्रह्म के अस्तित्व को स्वीकार करना क्योंकि आत्मा ही ब्रह्म है। ब्रह्म के यथार्थ अस्तित्व का प्रमाण यह है कि वह प्रत्येक की आत्मा की आधारभूमि है।

आत्मा के अस्तित्व के मुख्य प्रमाण निम्नलिखित हैं–

**साक्षात् प्रमाण**—सभी आत्मा का साक्षात् करते हैं। यह अपरोक्ष प्रत्यक्ष है। शंकराचार्य ने कहा है कि प्रत्येक मनुष्य अनुभव करता है कि 'मैं हूं।' कोई भी यह अनुभव नहीं करता कि 'मैं नहीं हूं।' यदि आत्मज्ञान प्रत्यक्ष न होता तो मनुष्य उसके 'न होने' अर्थात् अनस्तित्त्व का भी अनुभव करते जैसा कि घड़े में पानी न होने के कारण घड़ा खाली नजर आता है उसी तरह आत्मा के न होने पर शरीर भी खाली नजर आता। अतः प्रत्यक्ष अर्थात् साक्षात प्रमाण से यही कहा जा सकता है कि आत्मा का अस्तित्व है। शंकराचार्य के अनुसार जो आत्मा के अस्तित्व का खण्डन करता है या निराकरण करता है मानो वह आकाश में थूक रहा है, यह वह उस मेंढ़क के समान है जो कुएं में रहता हुआ समुद्र का ज्ञान

Scanned by CamScanner

प्राप्ति नहीं कर सकता। आत्मा ब्रह्म की मौज है और वह इसी अर्थ में सृष्टि के जीवों के जीवों में विचरती है अथवा क्रीड़ा करती है।

**अखण्डनीयता**–आत्मा का अस्तित्व अखण्ड है। शंकर के अनुसार जो आत्मा का खण्डन करता है या निराकरण करता है उसका ज्ञान ही खण्डित हो जाता है। आत्मा के अस्तित्व के कारण एवं ज्ञान की प्राप्ति आत्मा द्वारा होने के कारण आत्मा अखण्डनीय हो जाती है। पुनः कहा जा सकता है कि यदि कोई मनुष्य 'आत्मा है' इस पर संदेह करता है, तो संदेहकर्ता को बताना चाहिए कि उसका 'संदेह करना ही' यह सिद्ध करता है कि आत्मा है, क्योंकि संदेहकर्ता ही तो आत्मा है। वह ज्ञान स्वरूप है।

**स्वयंसिद्धता**–आत्मा अनुभव है। अनुभूति के कारण आत्मा का अस्तित्व स्वयं-सिद्ध है; वह सभी प्रमाणों का आधार है। इसलिए वह प्रमाणों से पूर्व ही सिद्ध है। यदि आत्मा का अस्तित्व नहीं, तो कोई भी प्रमाण प्रामाणिक नहीं है। शंकर के अनुसार, "आत्मा प्रमाण आदि विचार का आधार होने के कारण प्रमाण आदि विचारों से पूर्व ही सिद्ध व प्रामाणिक है।"

**अध्यारोप या अपवाद की प्रणाली**–'आत्मा' शब्द सर्वविदित एवं सर्वलोक प्रत्यक्ष होने पर भी सूक्ष्मतम होने के कारण ज्ञानेन्द्रियों द्वारा देखी नहीं जा सकती और न उसके किसी विशेष रूप का दर्शन होता है। इस अवगति अर्थात् अदर्शन के कारण यह दोष लगाया जाता है कि आत्मा नहीं है। परन्तु इस दोष को आरोपों के खण्ड से या निराकरण की विधि से समाप्त कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में इस आत्मा के विशेष स्वरूपों को सिद्ध करते हैं। आत्मा पर दोष लगाया जाता है कि वह देह, इंद्रिय, मन, बुद्धि, अहंकार, कर्त्ता, द्रष्टा, भोक्ता है। इन दोषों को दूर करके, अर्थात् इनका निराकरण करके सिद्ध किया जाता है कि आत्मा इनमें से कुछ नहीं, अतः आत्मा इनसे स्वतंत्र व परे है। इन प्रमाणों से आत्मा का अस्तित्व सिद्ध होता है। आत्मा-ज्ञान और आत्मा के अस्तित्व का एक ही अर्थ है। यह सत्, चित्, आनन्द है।

**आत्मा ब्रह्म है,** ऐसा उपनिषदों, गीता और अन्य धार्मिक व दार्शनिक ग्रन्थों में कहा गया है। वेदान्त दर्शन तर्कशास्त्र की सहायता से भी सिद्ध करता है कि आत्मा ब्रह्म है। शंकर के अनुसार आत्मा के अतिरिक्त सभी वस्तुओं को अवयवों में विभाजित किया जा सकता है, अतः आत्मा ही सर्वोच्च है, क्योंकि इसके अवयव नहीं होते, इस पर जल, वायु, अग्नि का कोई प्रभाव नहीं है। ब्रह्म का ज्ञात होना व आत्मा का ज्ञात होना एक ही बात है। सुरेश्वर के अनुसार

Scanned by CamScanner

आत्म सब जगह आत्मा से जुड़ी हुई होती है। यदि सभी विषय आत्मपूरक हैं तो आत्मा ही एक सत् है, यथार्थता है। इसलिये आत्मा ब्रह्म है। मण्डन मिश्र के अनुसार भेद नामक पदार्थ का अस्तित्व नहीं सिद्ध किया जा सकता। परमार्थतः भेद नामक वस्तु नहीं है, अतः आत्मा है और वह ही ब्रह्म ही जो अभेद है। आत्मा नित्य, शाश्वत, निर्गुण, पारमार्थिक सत् है।

जीवात्मा वह आत्मा है जो माया, प्रकृति के कारण बन्धनों में जकड़ी गई है। यही सुख, दुःख, प्यार आदि भावनाओं, वासनाओं, तृष्णाओं आदि को भोगती है। जीव के अन्दर यह कैद रहती है। जब यह जीवात्मा अपने आपको माया से मुक्त कर लेती है तो आत्मस्वरूप को प्राप्त कर लेती है और ब्रह्म रूप को धारण कर लेती है। 'आत्मा ही ब्रह्म है, ब्रह्म ही आत्मा है।' यह जगत् मिथ्या, माया, प्रपंच है। यही अद्वैत-वेदान्त का सार है।

Scanned by CamScanner